

संक्षिप्त भावार्थ_दासबोधामृत : अध्याय ४ : "चतुर्दश_ब्रह्म, मायोद्भव"

(मूळ दासबोध दशक ७ : " चतुर्दश _ब्रह्म")

ॐ श्री गणेशाय नमः |

श्रीराम जय राम जय जय राम | जय जय रघुवीर समर्थ !

वन्दू प्रथम या विनायकास | जो विद्याविदान्चा मूळ_पुरुष | नन्तर शारदादिक मूळ प्रकृतीस | सन्त साधुगण नि श्रोते जनासी (४.१)

जयासि जोडणे 'परमार्थ' | तेणे जाणून घ्यावा हा ग्रन्थ | इतरास येथील 'यथार्थ' | "अध्यात्म_विद्या" नुमगेल (४.२)

[७.१.२७_३१]

मुख्य पाहिजे 'सावध'पण | नन्तर "उत्तम_अर्थ" निवडून | साली टरफले त्यागून | भावार्थ स्वानुभवे जाणावा (४.३)

[७.१.४३_५१]

'माया_ब्रह्म' द्वैतातील | 'अद्वैत' जाणेल तोच चतुर | इतरांनी ठेउनी 'विश्वासा'वर भर | पुढे जाणे आवश्यक (४.४)

ब्राह्मणाचे 'ब्रह्म' ते सोवळे | शुद्रादिकान्चे 'ब्रह्म' ते ओवळे | ऐसा भेद नसे हो तेथे | सर्व सजीवातील जीवात्मा 'ब्रह्म'च (४.५)

तो न पालटे वयोमानानुसार | शरीरातील पेशी व अवयव | पालटतात अन्न_खाद्यादिकानुसार | म्हणून त्यांना 'माया' हे नाव जाणावे (४.६)

'मी' म्हणजे माझा हा 'देह' | ही 'देहबुद्धी' साण्डावी सत्वर | तरीच आध्यात्मिक उन्नतीचा मार्ग | सोपा होईल निश्चयेसी (४.७)

[७.२.३०_३९]

आता 'आत्मा' परब्रह्म स्वरूप | आणि 'देह' असे 'माया_ब्रह्म' रूप | दोन्हीही ब्रह्माचीच 'रूपं' | हेही जाणून घ्यायला हवे हो (४.८)

ऐशी ब्रह्माची निरनिराळी स्वरूपे | वेदान्ती बोलली चतुर्दश प्रकारे | त्यान्ची यादी व गुणधर्म मुख्यसे | जाणून घ्यावे हो जाणत्यांनी (४.८) [७.३.१_५]

पहिले ते शब्द_ब्रह्म | दुजे मीतिकाक्षर_ब्रह्म | तिसरे ते खं_ब्रह्म | बोलिली श्रुती (४.१०) [७.३.६]

चौथे ब्रह्म सर्व_ब्रह्म | पाचवे ते चैतन्य_ब्रह्म | सहावे जाणावे सत्ता_ब्रह्म | सातवे साक्ष_ब्रह्म जाणा (४.११) [७.३.७]

आठवे ब्रह्म 'सगुण_ब्रह्म' | नववे जाणावे 'निर्गुण_ब्रह्म' | दहावे ते 'वाच्य_ब्रह्म' | 'अनुभव_ब्रह्म' अकरावे (४.१२) [७.३.८_९]

'आनन्द_ब्रह्म' ते बारावे | 'तदाकार_ब्रह्म' स्वरूप तेरावे | 'अनुवाच्य_ब्रह्म' चौदावे | ऐशी चतुर्दश ब्रह्मांची यादी (४.१३)

[७.३.९_१०]

एकूण मायेची नाना स्वरूपे | ती सर्व ब्रह्माचीच मायावी स्वरूपे | त्यातील प्रमुख प्रकार निवडक असे | "चतुर्दश_ब्रह्म" जाणावे त्यासी (४.१४)

आपुला 'जीवात्मा' असे 'ब्रह्म_अन्श'च | परी तो होतो दुःखाने व्याकुळ | मोहाने लिप्तता करी कर्मे भ्रष्ट | अज्ञाने भ्रमिष्ठ भ्रान्त होतो (४.१५)

म्हणोनिया त्याला बाधते 'मलिनता' | रज, सत्व, तम या त्रिगुणांची लिप्तता | दृढ इच्छा_शक्तीने 'विरक्ती' अभ्यासता | 'ऊर्ध्व' गती 'पारमार्थिक' लाभे त्याला (४.१६)

करिता अष्टान्ग योगादिक क्रिया | प्राप्त होईल ज्यास अवस्था 'तुर्या' | त्याने त्या अवस्थेतील 'स्वानुभवा' | 'विमल_ब्रह्म' नावे ओळखावे (४.१७) [७.४.४७_५१]

'तुर्या' अवस्था सर्व साक्षिणी | सन्कल्प_विकल्पान्च्या स्तब्धतेची घडी | सख_दुःख अनुभवा पासून विरक्तशी | कैवल्य, शान्ति, समाधान स्वरूप (४.१८) [७.५.५_१४]

शुद्ध कल्पनेची खूण | स्वये कल्पिजे 'निर्गुण' | सदा स्व'स्वरूप' अनुसन्धान | अद्वैताचा निश्चितार्थ (४.१९) [७.५.३३_३६]

तुर्येतच शान्ती_समाधान पूर्वक | राहण्यास लागतो मनाचा 'निश्चय' | 'निश्चय' ढळताच क्षणार्धातच | ही चतुर्थावस्था भंग पावे (४.२०) [७.५.४१_४३]

वेद, शास्त्र, पुराणादि पवित्र_ग्रन्थ | सौभाग्ये झालिया यान्चे श्रवण | नासुनी दोषादिक, जन होती पावन | समाजात नान्दे सुख शान्ती (४.२१) [७.६.२९_३४]

बद्धः मुक्तः इति व्याख्या गुणतो मे, न वस्तुतः | गुणस्य 'माया'_मूलत्वात् न मे मोक्षो, न बन्धनः (४.२२)

तत्त्व_ज्ञात्याचा आत्मा परमशुद्ध | तयासी नाही **'बद्ध_मुक्त'** विनोद | वस्तुतः हा अवघा चित्ताकर्षक **'भ्रम'** | काल्पनिक **सुवर्ण_मृग** वा मृगजळ (४.२३) [७.६.५६_६१]

अद्वैत' ज्ञानाचा उपदेश | 'गुरुगीते'त स्वतः महेश | सान्नाता झाला पार्वतीस | 'हन्स' गीतेतही 'बोध' तोची (४.२४) [७.७.३३_३५]
राजा राजपदी विराजता | सुरळीत चाले राज्यभर 'सत्ता' | एरवी राजा स्वतः एकटा | धावेल कुठकुठे ? करील काय ? (४.२५)
[७.७.६०]

तेणेचि परी जाणावे **'साधन'** | स्नान, शुचित्व, पूजा, अध्ययन | योग_क्रिया, युक्ताहार भोजन | 'स्वास्थ्य' संरक्षण अत्यावश्यक (४.२६) [७.७.६२_६९]

काय करावे ? का ? कैसे ? कधी ? | काय न करावे ? का ? कैसे कधी ? | इत्यादिक सामान्य ज्ञान व माहिती | प्रत्येक व्यक्तीस असायला हवी (४.२७)

यास्तव योग्य पुस्तके मिळणे कठीण | वाचायला पाहिजे भाषा, लिपीन्चे ज्ञान | उजेड, चक्षू, बुद्धी, मन, ध्यान | सर्वही पाहिजे यथा_योग्य (४.२८)

बाल्ये, तारुण्यी, विद्यालयातुनी | शिकून घ्यावे ज्ञान, मन_चित्त लावुनी | मोठेपणी स्वाध्ययन पुस्तके वाचुनी | अथवा रेडिओ, टीव्ही इन्टरनेट मार्गे (४.२९)

अथवा योग्य गुरु, शेजारी पाजारी | असो बाल, पोक्त वा वृद्ध वयानी | गाठुनी, विनवुनी, प्रश्न विचारोनी | शिकावे, 'श्रवण' करोनिया (४.३०) [७.८.१२_३५]

ज्यान्ना असे भूक, आंस शिक्षणाची | त्यान्नी सांभाळोनी नोकरी इत्यादि | शिकतच रहावे यथायोग्य काही | वेळ, बुद्धी, कुडी, आवडी_प्रमाणे (४.३१) [७.८.३७_४८]

ज्यान्ना असे चाड, आवड आध्यात्मिक | त्यान्च्यासाठी 'ग्रन्थ' असती अनन्त | सर्व भाषांमधुन अनुवादित सौलभ्य | इन्टरनेट वरही आज प्राप्त (४.३२) [७.९.३२_३४]

पण ग्रन्थ' म्हणजे हजारो पाने | पोकळ कामुक वा कुटिल वर्णने | अथवा भडकावू मनमोहक रडगाणे | अनावश्यक निन्द्य हाणामारी, (४.३३) [७.९.३५_३८]

कुतर्कान्ची गुन्तागुन्तता | कथानकान्चा पसारा वा गुन्ता | दुरुपदेशक वा उद्देश हीनत्वता | ऐसे **'ग्रन्थ'** पठण टाळावे (४.३१)

धैर्य चढे, मनोबल वाढे | परोपकार वाढे, दुराशा मोडे | ज्ञान_वृद्धीस्तवच कथानकास मोडे | ऐसे 'ग्रन्थ' पठण घडावे नित्य

(४.३४)
पेरल्यावीणच उगवणार नाही | जे पेराल तेच उगवेल ही ग्वाही | शुद्ध बीजापोटी रसाळ गोमटी | फळे येतील योग्य जंमीनीतच (४.३५)

खडकावर वाढेल फक्त शेवाळ | समुद्र किनारीच नारळ रसाळ | योग्य पाऊस नसता पाणी शिडकवून | अपेक्षा फळान्ची करावी (४.३६)

अवकाळी पाऊस वा वादळाने | हानी होताच देवावरी कोपणे | इतके दिवस खाल्लेल्या अन्नास न जागणे | ऐशाने आयुष्य जाते वाया (४.३७)

'आयुष्य' लावावे सार्थकी | मेल्यावरही गातील जन सत्कीर्ती | ऐसे काही तरी करण्याची स्फुर्ती | मागावी ईश्वरी चरणापाशी (४.३८)

अति दुर्गम मार्ग **'ज्ञानार्जनाचा'** | सुलभ होतो प्राप्त, सद्गुरु लाभता | शीघ्रत्वे, कमी कालावधीत होय साध्यता | म्हणुनि दुण्ढा, भजा, सेवा सद्गुरूसी (४.३९) [७.१०.३६_४६]

पहा हो मानवी आयुष्याचे | 'मान'च मानिले शम्भर वर्षे | परन्तु तितुकेही पूर्ण जगणारे | फारच थोडे भाग्यवन्त (४.४०)

म्हणुनि करा करा हो घार्ई | वेळ धावतो अति शीघ्र पाही | स्वतःही शिका, शिकवा शिष्यासी | लगबगीने योग्यशा मार्गे (४.४१)

होईल देहान्त कधी कोण जाणे | अचानकच यमदूत उभा राहे पुढे | म्हणोनिया आजची शक्य तितकी क्षणे | उपयोगावी सूझ जाणत्यान्नी (४.४२)

(मूळ दासबोध दशक ८ : "द्वैत_अद्वैत तत्वज्ञान व पिण्ड ब्रह्माण्ड मायोद्भव")

वैश्विक सृष्टीत जे जे काही | घडले, घडतेय, घडेल पुढेही | ते सर्व नियमित "नियमावलम्बित" ही | हा अनुभव सिद्ध 'सिद्धान्त' जाणावा (४.४३)

हे प्राकृतिक_नियम जाणण्यासाठी | शास्त्रज्ञ लाखो, कोट्यावधी झटती | तरीही त्यान्वी सम्पूर्ण यादीही | आजवरी घडू शकलेली नाही (४.४४)

म्हणूनच हे अमानवीय कर्म घडविणारा | 'कर्ता' कोणीतरी असायलाच हवा | या तर्काने त्याच्या अस्तित्वा | मानून नाव त्यास दिधले 'देव' (४.४५) [८.१.२०_३७]

सूर्य, चन्द्र, तारे, ग्रह, नक्षत्रे | असंख्य आकाशगंगादिकान्चे | सृजन_स्थिति_प्रलयादिक कार्य प्रचण्ड हे | करणारा 'देव' मग 'मोड्डा', 'मूळ' मानला (४.४६)

'निर्गुण' अस्तित्वातुन सगुण उत्पत्ति | करू शकणारी ही दैवी दिव्य शक्ती | प्रमुख 'अद्वैत' परब्रह्म स्वरूपी | मानली वैदिक ऋषी_मुनि गणान्नी (४.४७)

सगुण अस्तित्व जे जे काही जन्मले | जे सतत बदलते स्वरूप आपापुले | त्या सर्वासही ब्रह्माचेच 'माया'रुप म्हंटले | ही 'मूळ' देवाचीच 'दिव्य'शी सन्तती (४.४८)

हे सूर्य, चन्द्र, जल, वायू इत्यादिक | दैवी अमानवीय शक्तीन्चे धारक | या प्रत्येकासही 'देव' मानताच | असन्ख्यसे हे देवही आदरणीय ठरले (४.४९)

यान्च्याच योगाने तो देव 'मोड्डा' | पुरवीत जातो माझ्या सर्व गरजा | म्हणून हे दोघेही 'पूज्य' या 'तर्का' | मानिता 'द्वैत' मत जन्मास आले (४.५०)

या द्वैत_अद्वैत तर्कान्च्या विवादे | पण्डितान्ना श्रेय वा करमणूक लाभु दे | सामान्य साधकान्ना मूळ_ज्ञान लाभु दे | प्रार्थना ऐशी परमेश्वरापासी (४.५१)

अगा जे कधी झालेचि नाही | त्याची "का ? कधी ?", वार्ता न पुसावी | परन्तू जे नित्य अनुभवास येई | 'मिथ्या' म्हणुनि त्यासी नोळखावे कैसे ? (४.५२) [८.३.१_१४]

ब्रह्म 'सत्य', जगत् 'मिथ्या' | हा आदि शंकराचार्यान्चा दावा | नीट पणाने तो समजून घ्यावा | 'मिथ्या' म्हणजे जाणा 'मन्थनात_प्राप्त' (४.५३)

न करिता योग्यसे "वैचारिक मन्थन" | अथवा सद्बुद्धीच्या मथनाविण | काढू नका हो अन्तिम निष्कर्ष | आन्धळ्या प्रमाणे चुकीचे (४.५४)

चक्षूस 'धृव' तारा, दिसतसे सुस्थिर | प्रत्यक्षच तो दिसे आकाशात नित्यच | इतर सर्व तारे फिरती त्या सभोवत | परी हा सर्व खेळ दृष्टी_भ्रमाचा (४.५५)

या दृष्टीच्या भ्रमाचे कारण | स्वतःच्याच भोवती, पृथ्वीचे सम्भ्रमण | मन्थनाने हे शास्त्रीय_ज्ञान | वा अभ्यासाने साध्य होई (४.५६)

हे असले भ्रम म्हणजे माया_ब्रह्म नव्हे | हे फक्त द्रष्ट्याचे अज्ञान आहे | म्हणुनि माया_ब्रह्माची उदाहरणे | नमून्या खातर पहावी येथे (४.५७)

सजीवा मधील 'जाणीव' शक्ती | "मी गाय, म्हेंस वा मानवादिक आहे" ही | तीच "मूळ_माया" त्या त्या देहातली | देहाहुनी भिन्न ती 'अशरीर' स्वरूप (४.५८)

काव्य लिहिण्याची कवीन्ची स्फुर्ती | लेख लिहिण्याची लेखकाची प्रवृत्ती | लैन्गिक स्त्री_पुरुष आकर्षणादिकी | या सर्व अदृश्य 'सूक्ष्म' माया (४.५९)

नित्य_नैमित्तिक कार्य क्रिया_शक्ती | “करूनच दाखवीन” अशी जिद्दी इच्छा_शक्ती | ज्ञान शिकुन शिकवण्याची ज्ञान_शक्ती | ही ही मूळ_मायेचीच प्रमुख तीन रूपे (४.६०)

इलेक्ट्रिक, मैग्नेटिक वा अण्वीक शक्ती | अथवा गुरुत्वाकर्षणादिकान्ची | आकर्षण, विकर्षण, निराकरण शक्ती | हीही सर्व अदृश्य 'सूक्ष्म' माया (४.६१)

देह_बुद्धिची जाणीव, मानसिक अहन्ता | इच्छा, भावना, वासना, कर्तुत्वता | स्मृती, ज्ञान, विज्ञान यान्ची योजकत्वता | ही सर्व माया_ब्रह्माची 'सूक्ष्म' स्वरूपे (४.६२)

देह_बुद्धिची जाणीव ही 'मूळ_माया' | तिचीच लेकरे या अन्य माया | सत्व_रज_तम या त्रिगुणान्ची माता | 'गुणक्षोभिणी' नावाने ओळखावी (४.६३)

सर्व चर_अचरान्चे देह वा शरीरे | जे अणू, परमाणू इत्यादिके बनले | माया_ब्रह्माची ती 'स्थूल' स्वरूपे | हे तार्किक नामाभिधान तत्व स्वरूप (४.६४)

त्रिगुणातही "उत्पत्ती_स्थिति_लय" स्वरूपी | ही 'स्थूल' स्वरूपे ब्रह्मा, हरि, हरान्ची | "सत्व, रज व तम" ही याच तीघान्ची | सूक्ष्म_स्वरूपे ओळखावी (४.६५)

पन्च_महाभूतातही हाच तर्क | 'व्याप्ती' हे 'स्थूल'पणे आकाशाचे रूप | परन्तू त्याचेच 'मानसिक' स्वरूप | जाणावे ते 'सूक्ष्म_आकाश' नावे (४.६६)

'वजन' हे पृथ्वीचे 'स्थूल' स्वरूप | बुद्धीतिल 'जाड्य' तिचे 'सूक्ष्म' रूप | हे सर्व बोलिले उदाहरणार्थ | स्थूल_सूक्ष्म विवेक वेदोपनिषदिक भाषेतला (४.६७)

“सोऽहम्” आत्मा स्वानन्दघन | "तत्_त्वम्_असि" निरन्तर | ऐशिया महावाक्यान्चा विसर | घडो न देईल तो तत्क्षणी 'मुक्त' (४.६८) [८.८.३३_३४]

'मोक्ष' वा 'मुक्ति' ही "मानसिक_अवस्था" | चार महावाक्यान्च्या बोधाचा गाभा | समजून विश्वसून निधारे अनुभविता | सम्प्राप्त होईल निश्चये (४.६९)

चतुर्वाक्यार्थ बोध हृदयी ठसावला | दुर्गुण, दुर्वासना ज्याने त्यागिल्या | "युक्ताहार_विहार_योग" सातत्ये आचरिला | तो मुक्त जाहला निश्चये (४.७०)

ब्रह्माण्डाच्या आंत व बाहेरही | निर्गुण परब्रह्म सतत स्थित राही | त्यावीण 'शून्यत्व' कोठेही नाही | हेचि अद्वैत परब्रह्म_ज्ञान (४.७१) [८.१०.६८]

इति श्रीसमर्थ_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त दासबोधामृत"सारे

"चतुर्दश_ब्रह्म, मायोद्भव" नाम चतुर्थोऽध्यायः

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु | जय जय रघुवीर समर्थ !